श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2012

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 27 जनवरी 2012	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
शनिवार 28 जनवरी 2012	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
रविवार 29 जनवरी 2012	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रातः 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग-1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें। **- ओमप्रकाश आचार्य, प्रबंधक-परीक्षा बोर्ड**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 30 (वीर नि. संवत् - 2538) 341 अंक : 5

जे दिन तुम विवेक...

जे दिन तुम विवेक बिन खोये ।। टेक।।

मोह वारुणी पी अनादि तैं, पर-पद में चिर सोये।
सुखकरण्ड चितपिण्ड आपपद, गुन अनन्त नहीं जोये।।
जे दिन तुम विवेक... ।। 1 ।।

होय बहिर्मुख ठानि राग-रुष, कर्म बीज बहु बोये।
तसु फल सुख-दुःख सामग्री लखि, चित में हरषे रोये।।
जे दिन तुम विवेक... ।। 2 ।।

धवल ध्यान शुचि सलिल पूरतें, आस्रव मल नहीं धोये।
परद्रव्यनि की चाह न रोकी, विविध परिग्रह ढोये।।
जे दिन तुम विवेक... ।। 3 ।।

अब निज में निज जान नियत तहाँ, निज परिणाम समोये।
यह शिवमारग समरस सागर, 'भागचन्द' हित तोये।।
जे दिन तुम विवेक... ।। 4 ।।

- कविवर पण्डित भागचंदजी

छहढाला प्रवचन

व्यवहार सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का व्याख्यान

जीव अजीव तत्त्व अरु आस्रव बंधरु संवर जानों।
निर्जर मोक्ष कहे जिन तिनको ज्यों का त्यों सरधानों।।
है सोई समकित व्यवहारी, अब इन रूप बखानों।
तिनको सुन सामान्य-विशेषैं दिढ़ प्रतीति उर आनों।।३।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

जिनेन्द्र भगवान ने जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष – ये सात तत्त्व जैसे कहे हैं; उसीप्रकार श्रद्धा करना व्यवहार सम्यग्दर्शन है। सामान्य और विशेष से उन सात तत्त्वों का स्वरूप कहेंगे, उसको सुनकर अंतर में उसकी दृढ प्रतीति करनी चाहिए।

दूसरी ढाल में यह बताया था कि मिथ्यादृष्टि जीव सात तत्त्व की श्रद्धा के विषय में कैसी भूल करता है और उसको छोड़ने का उपदेश दिया था; अब इस तीसरी ढाल में यह बताते हैं कि सम्यग्दर्शन होने पर सात तत्त्व की कैसी श्रद्धा हुई। सात तत्त्व का यथार्थस्वरूप अरिहंत परमात्मा के बिना अन्य किसी के मत में नहीं होता; अत: सम्यग्दृष्टि जीव अरिहंत परमात्मा के वीतरागमार्ग से भिन्न किसी भी कुमार्ग की श्रद्धा स्वप्न में भी नहीं करता। यह बात तो कुदेव का सेवन छोड़ने के उपदेश में आ गई। यहाँ तो आत्मा की पहिचान करके जो जीव सम्यग्दृष्टि हुआ उसको व्यवहार में भी तत्त्वश्रद्धा कैसी होती है – इसका वर्णन है।

नव तत्त्व की श्रद्धा तभी सच्ची हुई जबकि परद्रव्य से भिन्न और रागादि आस्रवों से भिन्न अपने शुद्धात्मा की रुचि करके निश्चय सम्यग्दर्शन प्रगट किया; और तभी भूतार्थ से नवतत्त्वों को जाना। धर्म का प्रारंभ ऐसे सम्यग्दर्शन से होता है।

निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र तो शुद्ध परिणति है, वह संवर-निर्जरा है और व्यवहार सम्यग्दर्शनादि में शुभराग है, वह आस्रव है। अंतर अनुभव सहित ज्ञायक आत्मा की प्रतीतिरूप जो शुद्ध परिणति हुई वह सिद्धदशा में भी रहती है; चतुर्थ गुणस्थान

(शेष पृष्ठ 19 पर ...)

(पृष्ठ 14 का शेष ...)

से उसका प्रारंभ हो जाता है। ऐसे सम्यग्दर्शन के साथ नवतत्त्व की विपरीतता नहीं रह सकती। वह पुण्य-आस्रव को संवर-निर्जरा या मोक्ष का कारण नहीं मानता; वह अजीवतत्त्व के भाव को जीव का नहीं मानता। सभी तत्त्वों को जैसे है वैसे ही जानता है।

जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष – ये सात तत्त्व सर्वज्ञ भगवान ने देखे हैं और जिनवाणी में उनका उपदेश है।

जीव तत्त्व : जगत् में अनन्त जीव हैं। स्वभाव से सभी जीव भिन्न-भिन्न एक समान हैं; परन्तु अवस्था की अपेक्षा जीवों के तीन प्रकार होते हैं – बहिरात्मा, अंतरात्मा और परमात्मा। बाहर में शरीर को ही आत्मा मानने वाले बहिरात्मा हैं, ऐसे जीव अनन्त हैं। अंतर में देह से भिन्न आत्मा को देखने वाला अंतरात्मा है, उसके अनेक प्रकार हैं, ऐसे अंतरात्मा जीव असंख्यात हैं। परम सर्वज्ञपद जिन्होंने प्राप्त कर लिया है, वे परमात्मा हैं; उनके दो प्रकार हैं ह्न अरिहन्त व सिद्ध; सिद्ध परमात्मा अनन्त हैं, अरिहन्त परमात्मा लाखों हैं। ऐसे भेद वाला जीव तत्त्व व्यवहार सम्यग्दर्शन का विषय है।

निश्चय सम्यग्दर्शन में अपने शुद्ध जीव की निर्विकल्प प्रतीति है, उसमें कोई भेद नहीं है। भेद को जानते समय भी समकिती जीव अकेले भेद में ही नहीं रुकते, अभेद शुद्धात्मा को लक्ष्य में रखकर भेद को जानते हैं। केवलज्ञानादि पर्याय होने का सामर्थ्य शुद्धात्मा में भरा है; अतः शुद्धात्मा की प्रतीति में वे सब समा जाते हैं। शुद्धात्मा की प्रतीति में परमात्मा की प्रतीति भी आ गई। जब आत्मा का शुद्ध स्वभाव अनुभव में लिया, तब अरिहन्त भगवान और सिद्ध भगवान को भी पहचान लिया।

अजीव तत्त्व : अजीव के मुख्य पाँच प्रकार हैं – पुद्गल, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश और काल। उनमें पुद्गल-परमाणु अनंत हैं। यह शरीरादि जितने भी पदार्थ इन्द्रियगम्य हैं, वे सब अजीव-पुद्गल की रचना है, जीव की रचना नहीं है। अन्य चार अजीव तत्त्व सूक्ष्म-अरूपी हैं।

जीवतत्त्व और अजीवतत्त्व को भिन्न-भिन्न जानना चाहिए। अजीव के किसी प्रकार को जीव में न मिलाना और जीव के किसी प्रकार को अजीव में न मिलाना। ज्ञान जीव का गुण है, वह इन्द्रिय का गुण नहीं है; जड़ इन्द्रियों से ज्ञान नहीं होता। इतना तो व्यवहार श्रद्धा में आ जाता है। इसमें भी जिसको विपरीतता हो, उसे तो व्यवहार श्रद्धा भी सच्ची नहीं होती। जीव-अजीव आदि तत्त्वों को जाने बिना वीतराग-विज्ञान नहीं होता और मोक्षमार्ग नहीं मिलता।

अरे ! अकेले व्यवहार तत्त्व के प्रकारों को जानने से भी मोक्षमार्ग नहीं मिलता। शुद्ध नय से अपने अन्तर में अखंड चेतनारूप शुद्ध आत्मा को स्व-विषय बनाये बिना पर-विषयों का सच्चा ज्ञान नहीं होता अर्थात् सच्चा व्यवहार नहीं होता।

स्व के ज्ञान से रहित पर के ज्ञान को व्यवहार भी नहीं कहते। मोक्षमार्ग में निश्चय सहित व्यवहार की ही बात है; अत: स्व का सच्चा ज्ञान साथ में रखकर पर का ज्ञान करना। स्व को जाने बिना अकेले पर को जानना चाहे तो पर में एकत्वबुद्धिरूप मिथ्यात्व हो जायेगा; क्योंकि पर से भिन्न अपना अस्तित्व तो उसके ज्ञान या प्रतीति में आया ही नहीं।

आस्रव तथा बंध तत्त्व : मिथ्यात्वादि भावों से कर्म का आस्रव तथा बंध होता है; पाप और पुण्य का भी आस्रव तथा बंध में समावेश होता है। पुण्य-पाप आदि को आस्रवरूप जानना; उनको संवर में न मिलाना आस्रव तत्त्व की श्रद्धा है। आस्रव का कोई भी प्रकार जीव के लिए हितरूप नहीं है या मोक्ष का कारण नहीं है ह्व ऐसा जानना चाहिए।

जो किसी भी प्रकार के आस्रव को हितरूप माने, उस जीव को आस्रव तत्त्व की सच्ची श्रद्धा नहीं है। शुभ या अशुभ दोनों प्रकार के बन्धन छोड़ने योग्य हैं, उनमें से एक भी भला नहीं है। शुभभाव भी जीव को बन्ध का ही कारण है, वह मोक्ष का साधन नहीं है। जो नवतत्त्व की सच्ची पहिचान करे, उसे पुण्य में हितबुद्धि नहीं रहती; पुण्य को भी वह त्याज्य समझता है, चैतन्य से भिन्न समझता है।

संवर तत्त्व : कर्मों का संवर सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप वीतरागभाव से होता है; आत्मा की शुद्धता होने पर अशुद्धता तथा कर्म का आना बंद हो जाता है। किस भूमिका में कितना संवर होता है और वहाँ कैसा निमित्त होता है तथा कैसा निमित्त छूट जाता है, यह भी पहिचानना चाहिए, उसमें विपरीतता नहीं होनी चाहिए। जैसे कि मुनिदशा में वीतरागभाव से इतना अधिक संवर हो गया कि वहाँ वस्त्र के परिग्रह की वृत्ति जितना आस्रवभाव नहीं रहता और निमित्त रूप से वस्त्र ग्रहणादि भी नहीं होता।

जो इससे विपरीत माने, उसे मुनि के संवर की पहचान नहीं है, संवर दशावाले मुनि को उसने नहीं पहिचाना।

उसीप्रकार जहाँ सम्यग्दर्शन हो, वहाँ मांसाहारादि जैसी पापप्रवृत्ति होती ही नहीं। अत: ऐसा पापास्रव भी वहाँ नहीं होता; ऐसी संवरदशा होती है। **(क्रमश:)**

नियमसार प्रवचन –

स्वभाव में जीवस्थान आदि नहीं

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 42वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

णो खइयभावठाणा णो खयउवसमसहावठाणा वा।
ओदइयभावठाणा णो उवसमणे सहावठाणा वा।।४२।।

इस जीव के क्षायिक क्षयोपशम और उपशम भाव के।
एवं उदयगत भाव के स्थान भी होते नहीं।।42।।

जीव को चार गति के भवों में परिभ्रमण, जन्म, जरा, मरण, रोग, शोक, कुल, योनि, जीवस्थान और मार्गणास्थान नहीं हैं।

(गतांक से आगे ...)

काय : पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पतिकाय तथा त्रसकाय ह्व ये छह काय हैं, इन सबसे भिन्न शुद्धभाव तो कायरहित है।

योग : मन-वचन-काय के योग-कम्पन तो एक समय की पर्याय में हैं; परन्तु शुद्धभाव में योगों का कम्पन नहीं है।

वेद : तीन प्रकार के वेद ह्व पुरुष, नपुंसक, स्त्री ह्व एक समय की पर्याय में हैं। शुद्धभाव वेद रहित हैं।

एक समय की पर्यायदृष्टि छुड़ाकर स्वभावदृष्टि कराने के लिये ऐसा कहा है। शुद्धभाव वाला आत्मा ही सम्यग्दर्शन का लक्ष्य है।

कषाय : क्रोध, मान, माया, लोभ के परिणाम एक समय की पर्याय में होते हैं, ये सभी परिणाम एक पर्याय में एक साथ ही होते हैं ह्व ऐसा कहने का आशय नहीं है; परन्तु ये सभी पर्याय में ही होते हैं; शुद्धस्वभाव में नहीं।

ज्ञान : मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय और केवलज्ञान ह्व ये पाँच तो ज्ञान के भेद और कुमति, कुश्रुत, कुअवधि ह्व ये तीन अज्ञान के भेद ह्व ऐसे आठ भेद पर्याय में होते हैं; जिस समय जो ज्ञान हो, उस समय वही समझना। सुज्ञान के समय कुज्ञान नहीं होता तथा केवलज्ञान के समय शेष चार ज्ञान नहीं होते। इनमें से कोई भी भेद

शरणभूत नहीं है।

केवलज्ञान एक समय की पर्याय है। एक समय की पर्याय त्रिकाली स्वभाव में नहीं है ह्न ऐसा कहकर शुद्धद्रव्य की दृष्टि कराई है।

इस कथन से कोई ऐसा मान ले कि पर्याय में ऐसे भेद नहीं हैं, तो यह बात खोटी है। भेद भेद में हैं, पर्यायें पर्यायों में हैं, उसका इन्कार नहीं है। यदि कोई ऐसा मान बैठे कि पर्याय पर्याय में बिल्कुल है ही नहीं ह्न तो यह मान्यता भ्रमपूर्ण है। पर्याय पर्याय में है; परन्तु त्रिकाली द्रव्य में नहीं है ह्न ऐसा वर्तमान और त्रिकाली का ज्ञान करके त्रिकाली स्वभाव की तरफ ढलकर सम्यग्दर्शन-ज्ञान प्रगट करे तो द्रव्य तथा पर्याय का ज्ञान सच्चा हुआ ह्न ऐसा कहा जाय।

पर्यायदृष्टि से भेद हैं; परन्तु स्वभावदृष्टि के बल से उन्हें अभूतार्थ कहकर उनका अभाव कहा गया है।

संयम : सामायिक, छेदोपस्थापना,परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात, असंयम और संयमासंयम ह्न ये संयम के भेद पर्याय में होते हैं, त्रिकाली स्वभाव में भेद नहीं हैं।

यहाँ स्वभावदृष्टि करवानी है। संयम की पर्याय संयम का कारण नहीं, संयम का कारण तो शुद्धभाव है।

वीतराग भगवान ने दो नय कहे हैं ह्न उनमें से व्यवहारनय पर्याय को तथा भेद को जानता है; किन्तु वह आदरणीय नहीं है। निश्चयनय त्रिकाली स्वभाव को जानता है; अतः वह आदरणीय है। भेद में भेद है; परन्तु अभेद में भेद नहीं ह्न ऐसा द्रव्यदृष्टि कराने को कहा है।

दर्शन : चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन ह्न ये चार दर्शन के भेद पर्याय में होते हैं ह्न जिस समय जैसा भेद हो वैसा समझना। शुद्धस्वभाव में ऐसे भेद नहीं। केवलदर्शन भी एक समय की पर्याय है ह्न त्रिकाली स्वभाव में यह भेद नहीं।

लेश्या : कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल ह्न इन छह लेश्याओं में प्रथम की तीन अशुभ और अन्तिम तीन शुभ हैं। एक समय की पर्याय में ऐसे भेद पड़ते हैं। जिस समय जो लेश्या हो वही समझना, किन्तु ऐसे भेद शुद्धस्वभाव में नहीं हैं।

भव्यत्व : मोक्ष के योग्य होना भव्यपना और मोक्ष के अयोग्य होना अभव्यपना ह्न इसप्रकार के विकल्प उठना भी एक समय की पर्याय में हैं; शुद्धभाव में ऐसे भेद नहीं।

सम्यक्त्व : उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक, मिथ्यात्व, सासादन और मिश्र ह्न ये पर्याय के छह भेद हैं। जिस समय जो पर्याय हो वही समझना; परन्तु वह एक समय की पर्याय ही है; त्रिकाली शुद्धभाव में ऐसे भेद नहीं हैं। सम्यग्दृष्टि की पर्याय सम्यक्त्व की पर्याय को स्वीकारती नहीं है ह्न वह तो त्रिकाली एकरूप शुद्धभाव को ही स्वीकारती है। भगवान के समीप जावे तो क्षायिक सम्यक्त्व होता है ह्न ऐसा कथन निमित्त का ज्ञान कराने के लिये किया है। सम्यक्त्वपर्याय में से सम्यक्त्व की दूसरे समय की पर्याय प्रगट नहीं होती ह्न पर्याय प्रगट होने का कारण त्रिकाल शुद्धभाव है। अतः त्रिकाली दृष्टि कराने के लिए कहा कि त्रिकाली में ऐसे भेद नहीं।

संज्ञित्व : संज्ञीपना और असंज्ञीपना ह्न ऐसे भेद पर्याय में होते हैं, शुद्धभाव में ऐसे भेद नहीं हैं; अतः त्रिकाली शुद्धभाव की दृष्टि करनी।

आहार : आहारकपना तथा अनाहारकपना-ऐसे भेद पर्याय में हैं, शुद्धभाव में नहीं।

ऐसे चौदह मार्गणास्थान के भेद पर्याय में ही होते हैं। शुद्धभाव की दृष्टि से देखा जावे तो आत्मा अभेद, एकाकार, शुद्ध है ह्न उसमें ऐसे भेद नहीं हैं।

आत्मा एकान्त से कूटस्थ नहीं है। व्यवहारनय से पर्याय में भेद पड़ते हैं; परन्तु निश्चयनय से आत्मा अभेद, एकरूप, शुद्ध है। त्रिकाली स्वभाव में ऐसे भेद नहीं हैं।

ये सभी अर्थात् चतुर्गतिभ्रमण, जन्म, मरण, रोग, शोक, कुल, योनि, जीवस्थान, गुणस्थानादि भेद भगवान परमात्मा में अथवा शुद्धस्वभाव-भाव में शुद्ध निश्चयनय से नहीं हैं ह्न ऐसा श्रीमद् भगवत् कुन्दकुन्दाचार्यदेव का अभिप्राय है।

यहाँ सिद्धपरमात्मा की बात नहीं है; किन्तु शुद्धभावरूपी कारणपरमात्मा प्रत्येक जीव है ह्न उसकी बात है।

ऐसा लेख पढ़कर कोई स्वच्छन्दी जीव ऐसा अर्थ निकाले कि आत्मा एकान्त से शुद्ध है और पर्याय में भी अशुद्ध नहीं है तथा भेद भी नहीं है; परन्तु मात्र अभेद और कूटस्थ ही है, तो ऐसी मान्यता खोटी है। आत्मा वस्तु ध्रुव होने पर भी पर्याय अपेक्षा से प्रतिसमय पलटती है। सिद्धों में भी परिणमन है। संसारी हो अथवा सिद्ध, सभी में प्रतिसमय अवस्था होती रहती है। परिणामरहित कोई समय नहीं हो सकता। संसार में अशुद्धरूप और सिद्ध में शुद्धरूप से परिणमन है, वे भेद पर्याय में पर्यायदृष्टि से सत् हैं ह्न अवस्तु नहीं।

(क्रमशः)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : सम्यग्दर्शन प्राप्त करने की विधि क्या है ?

उत्तर : 'पर का कर्त्ता आत्मा नहीं, राग का भी कर्त्ता नहीं, राग से भिन्न ज्ञायक मूर्ति हूँ' - ऐसी अन्तर में प्रतीति करना ही सम्यग्दर्शन प्राप्त करने की विधि है। ऐसा समय मिला है, जिसमें आत्मा को राग से भिन्न कर देना ही कर्त्तव्य है। अवसर चूकना बुद्धिमानी नहीं।

प्रश्न : त्रिकाली ध्रुव द्रव्य दृष्टि में आया - ऐसा कब कहा जाये ? वेदन में भी द्रव्य आता है क्या ?

उत्तर : चैतन्य त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मद्रव्य दृष्टि में आने पर नियम से पर्याय में आनन्द का वेदन आता है। इसी पर्याय को अलिंगग्रहण के 20वें बोल में आत्मा कहा है। त्रिकाली ध्रुव भगवान के ऊपर दृष्टि पड़ने पर आनन्द का अनुभव होता है, तभी द्रव्यदृष्टि हुई कही जाती है। यदि आनन्द का वेदन न हो तो उसकी दृष्टि द्रव्य पर गई ही नहीं। जिसकी दृष्टि द्रव्य के ऊपर जावे, उसको अनादिकालीन राग का वेदन टलकर आनन्द का वेदन पर्याय में होगा। ऐसी दशा में उसकी दृष्टि में द्रव्य आया है, तथापि वेदन में द्रव्य आता नहीं; क्योंकि पर्याय द्रव्य का स्पर्श करती नहीं। प्रभु की पर्याय में प्रभु का स्वीकार होने पर उस पर्याय में प्रभु का ज्ञान आता है; किन्तु पर्याय में प्रभु का - द्रव्य का वेदन नहीं आता। यदि वेदन में द्रव्य आवे तो द्रव्य का नाश हो जाय; परन्तु द्रव्य तो त्रिकाल टिकने वाला है, इसलिए वह पर्याय में आता नहीं अर्थात् पर्याय सामान्यद्रव्य को स्पर्श नहीं करती - ऐसा कहा।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन और आत्मा भेदरूप हैं या अभेदरूप हैं ?

उत्तर : यह सम्यग्दर्शनादि निर्मलपर्याय और आत्मा अभेद है। राग को और आत्मा को तो स्वभाव-भेद है; किन्तु यह सम्यग्दर्शन और शुद्धात्मा अभेद है। परिणति स्वभाव में अभेद होकर परिणमित हुई है, आत्मा स्वयं अभेदपने उस परिणतिरूप से परिणमित हुआ है - उसमें भेद नहीं है। व्यवहार सम्यग्दर्शन तो विकल्परूप है, वह कहीं आत्मा के साथ अभेद नहीं है।

समाचार दर्शन -

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव सम्पन्न

1. देवलाली (नासिक) : यहाँ कहाननगर में स्व. श्रीमती मधुकान्ताबेन रमेशभाई मेहता परिवार की ओर से भगवान महावीरस्वामी के 2538 वें निर्वाण महोत्सव के अवसर पर दिनांक 23 से 27 अक्टूबर तक विधान एवं व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार के संवर अधिकार पर मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. हेमचन्दजी हेम, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित अभिनन्दनजी खनियांधाना के व्याख्यानों का लाभ मिला।

इस अवसर पर आयोजित पंचपरमेष्ठी विधान संबंधी सभी कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना एवं पण्डित दीपकजी धवल ने सम्पन्न कराये।

दिनांक 26 अक्टूबर को प्रात: भगवान महावीरस्वामी के निर्वाण कल्याणक पर पूजन-विधान के उपरान्त निर्वाणलाडू समर्पित किया गया।

इसी प्रसंग पर **प्रतीक्षालय का उद्घाटन** श्री दिलीपकुमार उम्मेदलाल शाह परिवार राजकोट द्वारा तथा **विद्वत्गण भोजनालय का नामकरण** श्रीमती रंभाबेन पोपटलाल वोरा परिवार मुम्बई द्वारा किया गया।

2. मंगलायतन (अलीगढ) : यहाँ श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट अलीगढ एवं श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में 24 से 26 अक्टूबर तक आयोजित श्री महावीर निर्वाणोत्सव एवं आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ।

इसके पूर्व दिनांक 21 से 23 अक्टूबर तक गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्य शिष्य पुरुषार्थमूर्ति श्री निहालभाई सौगानी के जन्म शताब्दी महोत्सव का कार्यक्रम सौगानी परिवार कोलकाता/मुम्बई के सौजन्य से हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ गुरुदेवश्री के नैरोबी (अफ्रीका) में हुये वीडियो प्रवचन से हुआ।

इस अवसर पर विशेष रूप से पधारे हुए डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अतिप्रभावक दो प्रवचन हुये; जिसमें उन्होंने एक प्रवचन में सोगानीजी एवं उनके ग्रन्थ द्रव्यदृष्टिप्रकाश पर मार्मिक प्रकाश डाला और दूसरे प्रवचन में दृष्टि के विषयभूत भगवान आत्मा का स्वरूप स्पष्ट किया।

कार्यक्रम में द्रव्यदृष्टि प्रकाश के आधार से गोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सौगानीजी के जीवन पर निर्मित वीडियो के अतिरिक्त धन्य पुरुषार्थी, दृष्टि वैभव आदि अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

इस प्रसंग पर पण्डित विमलचन्दजी झांझरी उज्जैन, बाल ब्र. हेमन्तभाई गाँधी सोनगढ, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन मंगलायतन, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर एवं श्री पवनजी

जैन मंगलायतन का लाभ भी मिला।

3. दलपतपुर-सागर (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 27 अक्टूबर को प्रात: पंचकल्याणक विधान एवं सायंकाल 'भगवान महावीर एवं उनके अनुयायी' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री महेन्द्रजी सिंघई ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री शिखरचंदजी लोहिया, पण्डित अरुणजी मोदी, श्री मोतीलालजी साधेलिया, श्री महेन्द्रजी चौधरी, श्री प्रवीणकुमारजी दिवाकर, श्री विनोदजी मोदी, श्री भागचंदजी मोदी, श्री अरविन्दजी मोदी, श्री संतोषजी एवं श्री पुष्पेन्द्रजी चौधरी आदि उपस्थित थे।

गोष्ठी में श्री राजेशजी दिवाकर, श्री राजेशजी मोदी, श्री वैभवजी मोदी आदि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

इस गोष्ठी में श्रीमती ममता जैन, ऋचा लोहिया, कु.रेशू जैन, कु. रेशू दिवाकर, मोना जैन, मेघा जैन तथा विदुषी अनु चौधरी ने तथा शास्त्री विद्वानों में पण्डित विपुलजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री, पण्डित विकासजी शास्त्री, पण्डित संयमजी शास्त्री एवं पण्डित प्रिंसजी शास्त्री के वक्तव्य का लाभ प्राप्त हुआ।

सभा का संचालन तथा निर्देशन पण्डित निकलेशजी शास्त्री दिवाकर ने किया।

---

35 स्थानों पर जैनत्व जागरण शिविर

बकस्वाहा (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के आयोजकत्व में तथा अ.भा.जैन युवा फैडरेशन बकस्वाहा के तत्त्वावधान में लगभग 35 स्थानों पर तृतीय जैनत्व जागरण संस्कार शिविर दिनांक 28 अक्टूबर से 4 नवम्बर 2011 तक संपन्न हुआ।

इस ग्रुप शिविर में बकस्वाहा, मगरौन, बिलाई, ढिग्सर, फुटेरा, बटियागढ, दमोह, खड़ैरी, नैनधरा, बण्डा, रुरावन, नैनागिर, हीरापुर, तिगोड़ा, सापोन, बुढेरा, एरोरा, हटा, देवरान, दरगुंवा, शाहगढ, बरायठा, मुगवारी, बमनौरा, अजनौर, मड़देवरा, डांग आदि स्थानों पर बालकों में जैनत्व के संस्कार डाले गये।

इस अवसर पर श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, आचार्य धरसेन महाविद्यालय कोटा, आचार्य अकलंक महाविद्यालय बांसवाड़ा के विद्यार्थियों का सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविर का आयोजन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा के मार्गदर्शन में हुआ। बकस्वाहा में ब्र. सुमतप्रकाशजी द्वारा 4 दिनों तक ज्ञानस्वभाव विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुये। साथ ही सर्वोदय अहिंसा अभियान द्वारा अहिंसात्मक एवं प्रदूषण रहित दीपावली मनाने का संदेश दिया गया।

इस शिविर का निर्देशन चैतन्य शास्त्री, संतोष शास्त्री एवं वीरेन्द्र शास्त्री द्वारा एवं संयोजन रवीन्द्र शास्त्री, पंकज शास्त्री, अशोक शास्त्री एवं सनत शास्त्री द्वारा किया गया।

अष्टाह्निका महापर्व सम्पन्न

1. मुम्बई : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के पावन प्रसंग पर दिनांक 3 से 10 नवम्बर तक मुम्बई के विभिन्न उपनगरों में विद्वानों को आमंत्रित कर व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

इसके अन्तर्गत **बोरीवली** में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, **सीमंधर जिनालय** में पण्डित गुलाबचंदजी बीना, **दादर** में ब्र. नन्हेभैया सागर, **मलाड (ई.)** में पण्डित सौरभजी शास्त्री मुम्बई, **मलाड (एवरशाइन नगर)** में पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, **दहीसर** में पण्डित अनिलजी शास्त्री मुम्बई, **भायंदर** में पण्डित देवेन्द्रजी शास्त्री मंगलायतन का स्थानीय समाज को लाभ मिला। सभी स्थानों पर पूजन-विधान, प्रवचन, जिनेन्द्र-भक्ति, बाल एवं प्रौढ कक्षाओं का आयोजन किया गया।

2. दिल्ली (विश्वासनगर) : यहाँ कुन्दकुन्द कहान परमागम मंदिर ट्रस्ट विश्वासनगर के तत्त्वावधान में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 3 से 10 नवम्बर तक कल्पद्रुम विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार पर एवं सायंकाल प्रवचनसार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर द्वारा भी प्रवचन हुये।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अंकितजी शास्त्री, पण्डित मुकेशजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित सचिनजी शास्त्री एवं पण्डित आकाशजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये।

दिनांक 10 नवम्बर को जिनेन्द्र रथ यात्रा भी निकाली गई।

3. देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री रमणीक भाई सावला के निर्देशन में स्वाध्याय परिवार द्वारा दिनांक 3 से 10 नवम्बर तक 47 शक्ति विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के 47 शक्तियों पर सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा 47 शक्तियों पर दोनों समय मार्मिक प्रवचन हुये। कार्यक्रम में लगभग 250 लोगों ने पधारकर लाभ लिया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन में पण्डित दीपकजी धवल भोपाल द्वारा संपन्न कराये गये।

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा आयोजित साप्ताहिक गोष्ठियों की श्रृंखला में दिनाँक 16 अक्टूबर को **'द्रव्य-गुण-पर्याय : एक अनुशीलन'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में विवेक जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) व नवीन जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। साथ ही पंकज जैन, निलय जैन एवं समर्पण जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

आभार प्रदर्शन टोडरमल महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया। गोष्ठी का संचालन अभिषेक जैन दिल्ली एवं अर्पित जैन सेमारी (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया। मंगलाचरण विशाल जैन पिड़ावा (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

परीक्षा कार्यक्रम

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) की द्वितीय सेमेस्टर परीक्षा दिनांक 25 से 31 दिसम्बर 2011 तक निश्चित की गई है। तदनुसार परीक्षा प्रश्नपत्र 20 दिसम्बर 2011 तक संबंधित परीक्षार्थियों को डाक द्वारा पहुँचा दिये जावेंगे।

परीक्षा विषय का विस्तृत विवरण

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा द्वितीय सेमेस्टर

प्रथमवर्ष : वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग-दो और वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग-तीन

द्वितीयवर्ष : तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-दो और धर्म के दशलक्षण + भक्तामर स्तोत्र

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा द्वितीय सेमेस्टर

प्रथमवर्ष : रत्नकरण्ड श्रावकाचार 150 श्लोक (केवल श्लोकार्थ) और रामकहानी+आप कुछ भी कहो

द्वितीयवर्ष : मोक्षमार्गप्रकाशक (1 से 4 अधिकार), नयचक्र (निश्चय-व्यवहार नय) हरिवंशकथा + भ.महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ

तृतीयवर्ष : मोक्षमार्गप्रकाशक (5 से 9 अधिकार), नयचक्र (द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिक नय) और शलाकापुरुष (सम्पूर्ण)

आगामी कार्यक्रम...

आध्यात्मिक संगोष्ठी

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ दि. जैन महावीर परमागम मंदिर ट्रस्ट द्वारा महावीर परमागम मंदिर महावीर चौक में दिनांक 11 से 16 दिसम्बर तक ब्र. रवीन्द्रजी के सानिध्य में एक आध्यात्मिक संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा। आप सभी सादर आमंत्रित हैं; आवास व भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी। **संपर्क सूत्र :** पण्डित महेन्द्रकुमारजी शास्त्री (मंत्री) मो. 09770187377, श्री कौशल किशोरजी (उपमंत्री) मो. 9826235176, श्री वीरसेनजी सर्राफ (अध्यक्ष) मो. 09926558138

शीघ्रता करें

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दि. 21 से 27 फरवरी, 2012 तक होनेवाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु यदि आपने 24 फरवरी को पाण्डुक शिला पर होने वाले बाल तीर्थंकर आदिकुमार के न्हवन हेतु जन्माभिषेक कलश का आरक्षण अभी तक नहीं कराया है तो कृपया शीघ्रता करें।

इसकी राशि आप 'पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट' के नाम से चैक/डी.डी. बनाकर अथवा ट्रस्ट के पंजाब नेशनल बैंक, शाखा-बापूनगर, जयपुर के खाता संख्या 0247000100024619 में जमा कराकर उसकी स्लिप स्वीकृति पत्र के साथ संलग्न करें। कलशों का विवरण निम्नानुसार हैह्न

परमेष्ठी कलश	चर्चा द्वारा	रत्नत्रय कलश	21 हजार
कुन्दकुन्द कलश	चर्चा द्वारा	रत्न कलश	11 हजार
अमृतचंद कलश	5 लाख	स्वर्ण कलश	5100/-
टोडरमल कलश	1 लाख	रजत कलश	2100/-
पंचरत्न कलश	51 हजार	ताम्र कलश	1100/-

मूल आगमग्रन्थों के प्रकाशन के क्षेत्र में ऐतिहासिक योजना

पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित तत्त्वज्ञान के प्रचार प्रसार में संलग्न देश की तीन प्रमुख संस्थाओं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर एवं तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ ने संयुक्त रूप से मूल आगम ग्रन्थों के प्रकाशन की एक अभिनव योजना तैयार की है।

इस योजना की जानकारी दीपावली के प्रसंग पर मंगलायतन में आयोजित शिविर के अवसर पर श्री पवनजी जैन मंगलायतन, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, श्री अनुजभाई सेठ ने तथा देवलाली में अनन्तभाई सेठ, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं देवलाली ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री कान्तिभाई मोटानी ने देवलाली में खड़े होकर जब समाज को दी तो पूरी समाज में एक हर्ष की लहर दौड़ गई।

यह योजना समस्त समाज की जानकारी हेतु निम्नानुसार प्रकाशित की जा रही है -

1. इस योजना के अन्तर्गत आचार्य भगवन्तों एवं ज्ञानी, विद्वानों द्वारा रचित मूल ग्रन्थों का प्रकाशन किया जायेगा, इस कार्य को साकाररूप प्रदान करने के लिए 1. श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई, 2. पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर एवं 3. तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ सामूहिकरूप से इस जिम्मेदारी का निर्वहन करेंगे।
2. किसी भी मूल ग्रन्थ के प्रकाशन सम्बन्धी निर्णय हेतु डॉ. हुकमचंद भारिल्ल जयपुर, श्री अनन्तभाई ए.सेठ मुम्बई, श्री पवन जैन अलीगढ, ब्र. हेमन्तभाई गाँधी सोनगढ, पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन बिजौलिया की पाँच सदस्यीय कमेटी का निर्णय सर्वमान्य रहेगा।
3. प्रत्येक मूल ग्रन्थ में आचार्य भगवन्त एवं गुरुदेवश्री का चित्र प्रकाशित किया जायेगा।
4. ग्रन्थ का प्रकाशन खर्च तीनों संस्थाओं के निर्णय के अनुसार 1. श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई - 50%, 2. पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर - 25%, 3. तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ-25% के अनुसार विभाजित किया जायेगा।
5. मूल ग्रन्थों के कुल प्रकाशन की 20% संख्या पारमार्थिक ट्रस्ट को भेजकर, शेष संख्या को दोनों संस्थाएँ समानरूप से वितरित करेंगी।
6. तीर्थधाम मंगलायतन पर प्रकाशन व्यवस्था का दायित्व रहेगा एवं पण्डित टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर इन ग्रन्थों के प्रकाशन में योग्य सहयोग करेगा।
7. लागत मूल्य में सहयोग प्रदान करने हेतु प्रकाशन सहयोगकर्ता तथा ग्रन्थ का विक्रय-मूल्य कम करने हेतु आर्थिक सहयोग स्वीकार किया जा सकता है।
8. तीनों संस्थाएँ संयुक्तरूप से मूल ग्रन्थों के प्रकाशन हेतु एक स्वतन्त्र ग्रन्थमाला संचालन करेंगी, जिसके अन्तर्गत ये सभी ग्रन्थ प्रकाशित किये जायेंगे।
9. मूल ग्रन्थों के अतिरिक्त तीनों संस्थाओं से प्रकाशित पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन ग्रन्थों/साहित्य में भी पूज्य गुरुदेवश्री का चित्र प्रमुखता से लगाया जायेगा। पूज्य गुरुदेवश्री के चित्र में समानता रहे ह्न तदर्थ प्रकाशन कमेटी द्वारा मूल ग्रन्थ एवं पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन साहित्य के लिए योग्य चित्र का चयन कर, शीघ्र निर्णय किया जायेगा।

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल	**श्री अनन्तभाई ए. सेठ**	**श्री पवन जैन**	**पण्डित देवेन्द्र जैन**
जयपुर	मुम्बई	अलीगढ	बिजौलिया

महामहोत्सव के शेष पात्र एवं उनकी राशियाँ

श्री टोडरमल स्मारक भवन के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में सक्रिय भाग लेने हेतु अब निम्न विवरण के अनुसार कुछ ही पद शेष रहे हैं, अधिकांश भरे जा चुके हैं। जिन भी भाईयों की इनमें जिसप्रकार भी सहयोग देने की भावना हो, वे अपना आरक्षण शीघ्र कराने हेतु जयपुर कार्यालय में श्री पीयूष जैन से उनके मो. नं. 9785643202 पर संपर्क करें अथवा info@ptst.in **पर ई-मेल करें -**

इशान इन्द्र	- चर्चा द्वारा
महेन्द्र इन्द्र	- चर्चा द्वारा
महामंत्री	- चर्चा द्वारा
9 से 12 नं.तक के इन्द्र	- 5 लाख (प्रत्येक)
8 से 12 नं तक के प्रतीन्द्र	-2.5 लाख (प्रत्येक)
2 से 8 नं. तक के राजा	- 2 लाख (प्रत्येक)
12 से 16 नं. तक के राजा	-1.5 लाख (प्रत्येक)
23 एवं 24 नं. के राजा	- 1 लाख (प्रत्येक)
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के सिंहद्वार उद्घाटनकर्त्ता	- 5 लाख
सीमंधर जिनालय के उद्घाटनकर्त्ता	- 5 लाख
त्रिमूर्ति जिनालय के उद्घाटनकर्त्ता	- चर्चा द्वारा
पाषाण के 51 इंच वासूपूज्य भगवान के भेंटकर्त्ता एवं विराजमानकर्त्ता (3)	- चर्चा द्वारा
पाषाण के 51 इंच नेमिनाथ भगवान के भेंटकर्त्ता एवं विराजमानकर्त्ता (2)	- चर्चा द्वारा
प्रात:काल के भोजन हेतु सहयोग	- 5 लाख
सायंकाल के भोजन हेतु सहयोग	- 3 लाख
भोजन हेतु सहयोग	- 1 लाख (प्रत्येक)

सीमंधर जिनालय में चन्द्रप्रभ भगवान के दूसरी साइड वाली वेदी पर

(1) कुन्दकुन्दाचार्य के पट के भेंटकर्त्ता एवं विराजमानकर्त्ता	-2.5 लाख
(2) कुन्दकुन्दाचार्य के चरण चिह्न के भेंटकर्त्ता एवं विराजमानकर्त्ता	- 5 लाख
(3) कुन्दकुन्दाचार्य की वेदी पर पंच परमागम विराजमानकर्त्ता (5)	-51 हजार (प्रत्येक)
(4) कुन्दकुन्दाचार्य की वेदी पर कलशारोहणकर्त्ता	-51 हजार
कुन्दकुन्दाचार्य की वेदी पर ध्वजारोहणकर्त्ता	-51 हजार

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -

वेबसाइट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com